

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 9, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. उत्तर वैदिक काल के दौरान शहरी केंद्रों के उद्भव और उससे जुड़े सामाजिक-आर्थिक विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. गंगा के मैदानों में किलेबंद बस्तियों के विकास को कृषि विस्तार में लौह प्रौद्योगिकी (लोहे के उपयोग) के बढ़ते उपयोग द्वारा सुगम बनाया गया था।
2. उत्तर वैदिक साहित्य ने सामाजिक रूप से विभाजनकारी और आर्थिक रूप से बोझिल होने के कारण विस्तृत बलि अनुष्ठानों की लगातार आलोचना की।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** उत्तर वैदिक काल के दौरान, लोहे के उपकरणों (इम्प्लीमेंट्स) के उपयोग ने गंगा के मैदानों में बड़े पैमाने पर जंगलों की कटाई और कृषि विस्तार को सक्षम बनाया, जिससे अधिशेष (सरप्लस) उत्पादन हुआ और किलेबंद बस्तियों व आदि-शहरी केंद्रों (proto-urban centres) का उदय हुआ।
- **कथन 2 गलत है।** उत्तर वैदिक काल के ब्राह्मण ग्रंथों ने बड़े पैमाने पर कर्मकांडीय बलिदानों (बलि अनुष्ठानों) का समर्थन किया और उनका विस्तार से वर्णन किया। अत्यधिक कर्मकांड की आलोचना उपनिषद काल और बाद के गैर-रूढ़िवादी/नास्तिक परंपराओं (जैसे बौद्ध और जैन धर्म) में अधिक मुखर हुई।

इसलिए, विकल्प (a) सही उत्तर है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सबसे अच्छी व्याख्या करता है कि क्यों जैव विविधता हॉटस्पॉट (biodiversity hotspots) को तुलनात्मक रूप से उच्च प्रजाति समृद्धि वाले कई समशीतोष्ण (temperate) पारिस्थितिक तंत्रों की तुलना में पारिस्थितिक व्यवधान के प्रति अधिक संवेदनशील माना जाता है?

- (a) वे अनिवार्य रूप से स्थानिक (endemic) प्रजातियों के बीच आनुवंशिक विविधता के निम्न स्तर को प्रदर्शित करते हैं।
- (b) इन क्षेत्रों में रहने वाली प्रजातियों की एक बड़ी संख्या में संकीर्ण पारिस्थितिक सहनशीलता (narrow ecological tolerance) और अत्यधिक सीमित भौगोलिक वितरण होता है।
- (c) उनकी पोषी संरचना (trophic structure) मुख्य रूप से शीर्ष शिकारियों (apex predators) के प्रभुत्व की विशेषता है।

(d) ऐसे पारिस्थितिक तंत्रों में आम तौर पर प्रभावी पोषक चक्रण (nutrient cycling) और पारिस्थितिक अनुक्रमण (ecological succession) प्रक्रियाओं का अभाव होता है।

उत्तर: (b)

व्याख्या:

जैव विविधता हॉटस्पॉट अत्यधिक व्यापक आवास क्षरण (habitat degradation) के साथ-साथ स्थानिकवाद (endemism - किसी विशेष क्षेत्र तक ही सीमित होना) के असाधारण उच्च स्तर द्वारा चिह्नित होते हैं। संकीर्ण पारिस्थितिक निकेत (narrow ecological niches) और सीमित भौगोलिक सीमाओं तक सीमित प्रजातियां वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और आक्रामक प्रजातियों जैसे व्यवधानों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होती हैं।

- विकल्प (a) गलत है क्योंकि जैव विविधता हॉटस्पॉट काफी आनुवंशिक विविधता प्रदर्शित कर सकते हैं।
- विकल्प (c) गलत है क्योंकि शीर्ष शिकारियों का प्रभुत्व हॉटस्पॉट की कोई परिभाषित पारिस्थितिक विशेषता नहीं है।
- विकल्प (d) गलत है क्योंकि पोषक तत्व चक्रण और पारिस्थितिक अनुक्रमण सभी कार्यशील पारिस्थितिक तंत्रों के अभिन्न अंग हैं।

अतः, विकल्प (b) सही उत्तर है।

प्रश्न 3. विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक विकास और संरचनात्मक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जीडीपी (GDP) में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी में वृद्धि अनिवार्य रूप से पूर्ण औद्योगिक उत्पादन (absolute industrial output) में गिरावट का संकेत देती है।
2. कई विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में, जीडीपी में कृषि क्षेत्र के योगदान में उल्लेखनीय गिरावट के बाद भी कार्यबल (workforce) कृषि में ही संकेंद्रित रह सकता है।
3. उत्पादक निवेश की अनुपस्थिति में तेजी से वित्तीय गहनता (financial deepening) आनुपातिक रोजगार के अवसर पैदा किए बिना सट्टा आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दे सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- कथन 1 गलत है। जीडीपी में सेवाओं की बढ़ती हिस्सेदारी का अनिवार्य रूप से यह अर्थ नहीं है कि पूर्ण रूप से औद्योगिक उत्पादन में गिरावट आई है। औद्योगिक उत्पादन बढ़ना जारी रह सकता है, भले ही सेवाओं की तुलना में उसकी दर धीमी हो।

- **कथन 2 सही है।** भारत सहित कई विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में, जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी में गिरावट अक्सर कृषि पर निर्भर कार्यबल की कमी की तुलना में कहीं अधिक तेजी से होती है, जो प्रच्छन्न बेरोजगारी (disguised unemployment) और अधूरे संरचनात्मक परिवर्तन को दर्शाती है।
- **कथन 3 सही है।** पर्याप्त उत्पादक निवेश के बिना अत्यधिक वित्तीयकरण (excessive financialization) से सट्टा विकास और परिसंपत्ति मुद्रास्फीति (asset inflation) हो सकती है, जिसके अनुरूप रोजगार का सृजन नहीं होता है।

इसलिए, केवल कथन 2 और 3 सही हैं। अतः विकल्प (b)।

प्रश्न 4. भारत में संवैधानिक शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सामूहिक जिम्मेदारी का सिद्धांत यह मांग करता है कि यदि कोई मंत्री कैबिनेट के फैसले से सार्वजनिक रूप से असहमति जताता है, तो उसे इस्तीफा देना होगा।
2. राज्यपाल सभी परिस्थितियों में केवल मंत्रिपरिषद की सलाह पर कार्य करने के लिए संवैधानिक रूप से बाध्य है।
3. न्यायपालिका की समीक्षा (न्यायिक समीक्षा) के अधीन, संसद के पास मौलिक अधिकारों में संशोधन करने की शक्ति है।
4. राज्यसभा विशेष बहुमत के प्रस्ताव के माध्यम से संसद को राष्ट्रीय हित में राज्य सूची के मामलों पर कानून बनाने के लिए अधिकृत कर सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धांत के अनुसार मंत्रियों को कैबिनेट के फैसलों का सार्वजनिक रूप से समर्थन करना आवश्यक है; ऐसा न करने पर पारंपरिक रूप से इस्तीफा देना आवश्यक हो जाता है।
- **कथन 2 गलत है।** हालांकि राज्यपाल आमतौर पर मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करता है, लेकिन संविधान कुछ असाधारण स्थितियों में विवेकाधीन शक्तियां (discretionary powers) प्रदान करता है।
- **कथन 3 सही है।** बुनियादी ढांचा (Basic Structure) सिद्धांत के तहत, केशवानंद भारती निर्णय के बाद, मौलिक अधिकारों को प्रभावित करने वाले संशोधनों सहित सभी संवैधानिक संशोधन न्यायिक समीक्षा के अधीन हैं।
- **कथन 4 सही है।** अनुच्छेद 249 के तहत, राज्यसभा उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के दो-तिहाई (विशेष) बहुमत से प्रस्ताव पारित करके संसद को राष्ट्रीय हित में राज्य सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार दे सकती है।

अतः कथन 1, 3 और 4 सही हैं। इसलिए, विकल्प (c) सही उत्तर है।

प्रश्न 5. कथन (Assertion) – कारण (Reason) प्रकार

कथन (A): मानसूनी वर्षा की विशेषता वाले क्षेत्रों की नदियों के जल प्रवाह (डिस्चार्ज) में अक्सर स्पष्ट मौसमी उतार-चढ़ाव देखा जाता है।

कारण (R1): मानसूनी जलवायु में, वार्षिक वर्षा का एक बड़ा हिस्सा वर्ष की एक सीमित अवधि के भीतर ही प्राप्त होता है।

कारण (R2): मानसूनी क्षेत्रों की अधिकांश नदियाँ विशेष रूप से हिमनद-पोषित (glacier-fed) होती हैं और इसलिए मौसमी वर्षा के उतार-चढ़ाव से काफी हद तक अप्रभावित रहती हैं।

(a) R1 और R2 दोनों सही हैं, और दोनों A की व्याख्या करते हैं।

(b) R1 सही है लेकिन R2 गलत है।

(c) R1 गलत है लेकिन R2 सही है।

(d) R1 और R2 दोनों गलत हैं।

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन (A) सही है।** मानसूनी क्षेत्रों की नदियाँ आमतौर पर मानसून के मौसम के दौरान वर्षा के संकेंद्रण के कारण जल प्रवाह (डिस्चार्ज) में उच्च मौसमी परिवर्तनशीलता प्रदर्शित करती हैं।
- **कारण (R1) सही है** और कथन की उचित व्याख्या करता है। संकेंद्रित मौसमी वर्षा के परिणामस्वरूप गीले (वर्षा वाले) महीनों के दौरान उच्च नदी प्रवाह होता है और शुष्क अवधियों के दौरान तुलनात्मक रूप से कम प्रवाह होता है।
- **कारण (R2) गलत है।** मानसूनी क्षेत्रों की अधिकांश नदियाँ विशेष रूप से हिमनदों से पोषित नहीं होती हैं; कई नदियाँ वर्षा-पोषित होती हैं या मिश्रित जल विज्ञान प्रणाली (hydrological regimes) वाली होती हैं। परिणामस्वरूप, मौसमी वर्षा का नदी के जल प्रवाह पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

इसलिए, विकल्प (b) सही उत्तर है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. कोमागाटा मारु घटना (Komagata Maru Incident) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस घटना ने ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर अश्वेत/एशियाई प्रवासियों के खिलाफ श्वेत उपनिवेशों (settler colonies) द्वारा अपनाई जाने वाली भेदभावपूर्ण आब्रजन (इमिग्रेशन) नीतियों को उजागर किया।
2. कोमागाटा मारु के यात्रियों को कनाडा में प्रवेश देने से मुख्य रूप से इसलिए इनकार कर दिया गया था क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश नागरिकता और क्राउन (राजशाही) के प्रति निष्ठा को त्यागने से इनकार कर दिया था।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों कथन
- (c) दोनों में से कोई भी नहीं
- (d) केवल कथन 2

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** कोमागाटा मारु घटना ने कनाडा के नस्लीय रूप से भेदभावपूर्ण आब्रजन ढांचे को उजागर किया, विशेष रूप से "सतत यात्रा विनियमन" (continuous journey regulation) को, जिसने ब्रिटिश प्रजा होने के बावजूद भारतीय प्रवासियों को प्रभावी रूप से प्रतिबंधित कर दिया था।
- **कथन 2 गलत है।** यात्रियों को ब्रिटिश नागरिकता त्यागने से इनकार करने के कारण प्रवेश देने से मना नहीं किया गया था। बल्कि, कनाडाई अधिकारियों ने विशेष रूप से एशियाई आब्रजन को प्रतिबंधित करने के लिए बनाए गए अपवर्जनात्मक (exclusionary) आब्रजन कानूनों का उपयोग किया था।

अतः, केवल एक कथन सही है। इसलिए, विकल्प (a)।

प्रश्न 2. स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के लिए इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक द्वारा हाल ही में शुरू की गई बचत पहल के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इसके व्यापक विकासात्मक महत्व का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

- (a) यह ग्रामीण ऋण वितरण में सहकारी बैंकिंग संस्थानों को प्रतिस्थापित (रिप्लेस) करना चाहता है।
- (b) इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं के नेतृत्व वाले अनौपचारिक बचत नेटवर्कों को औपचारिक डिजिटल वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में एकीकृत करना है।
- (c) यह स्वयं सहायता समूहों को डाक बैंकिंग बुनियादी ढांचे के माध्यम से सीधे संप्रभु (सोवरेन) बॉन्ड नीलामियों में भाग लेने में सक्षम बनाता है।
- (d) यह राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत संचालित स्वयं सहायता समूहों को वैधानिक बैंकिंग लाइसेंस प्रदान करता है।

उत्तर: (b)

व्याख्या:

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक द्वारा शुरू की गई 'SHG बचत खाता' पहल का उद्देश्य महिलाओं के नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में डिजिटल रूप से एकीकृत करके वित्तीय समावेशन (financial

inclusion) को गहरा करना है। यह राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के तहत पहलों को पूरक बनाता है और ग्रामीण डिजिटल बैंकिंग पहुंच को मजबूत करता है।

- विकल्प (a) गलत है क्योंकि यह योजना सहकारी बैंकों को प्रतिस्थापित नहीं करती है।
- विकल्प (c) गलत है क्योंकि स्वयं सहायता समूहों को सोवरेन बॉन्ड में भागीदारी के लिए सक्षम नहीं किया जा रहा है।
- विकल्प (d) गलत है क्योंकि स्वयं सहायता समूहों को वैधानिक बैंकिंग लाइसेंस प्रदान नहीं किए जाते हैं। इसलिए, विकल्प (b) सही है।

प्रश्न 3. ऑप नेत्रा 1.0 (Op Netra 1.0) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह अंतरिक्ष मलबे (space debris) और अन्य कक्षीय खतरों का पता लगाने और उनकी निगरानी करने की भारत की क्षमता से जुड़ा है।
2. यह पहल विशेष रूप से नागरिक उपग्रह नेविगेशन के लिए है और इसका कोई रणनीतिक या रक्षा महत्व नहीं है।
3. यह स्वदेशी अंतरिक्ष स्थितिजन्य जागरूकता (SSA - Space Situational Awareness) बुनियादी ढांचे पर भारत के बढ़ते जोर को दर्शाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** ऑप नेत्रा 1.0 को अंतरिक्ष मलबे, उपग्रहों और संभावित कक्षीय खतरों को ट्रैक करने की भारत की क्षमता को बेहतर बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **कथन 2 गलत है।** इस कार्यक्रम का महत्वपूर्ण रणनीतिक और रक्षा महत्व है, विशेष रूप से सैन्य उपग्रहों और अंतरिक्ष सुरक्षा के संदर्भ में।
- **कथन 3 सही है।** यह स्वदेशी अंतरिक्ष स्थितिजन्य जागरूकता (SSA) क्षमताओं को विकसित करने की दिशा में भारत के प्रयासों का प्रतिनिधित्व करता है।

इस प्रकार, कथन 1 और 3 सही हैं। अतः, विकल्प (b)।

प्रश्न 4. अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. AMOC उष्णकटिबंधीय (tropics) और उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र के बीच गर्मी के वितरण को विनियमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. AMOC का काफी कमजोर होना संभावित रूप से विभिन्न महाद्वीपों में मानसूनी प्रणालियों और क्षेत्रीय जलवायु स्थिरता को बदल सकता है।
3. AMOC विशेष रूप से सतह की पवन परिसंचरण (सतही हवाओं) द्वारा संचालित होता है और समुद्री जल में लवणता (salinity) के उतार-चढ़ाव से अप्रभावित रहता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** AMOC सतह के गर्म पानी को उत्तर की ओर और गहरे ठंडे पानी को दक्षिण की ओर ले जाता है, जिससे वैश्विक जलवायु और गर्मी का वितरण नियंत्रित होता है।
- **कथन 2 सही है।** वैज्ञानिक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि AMOC के कमजोर होने से मानसूनी परिसंचरण सहित वर्षा प्रणालियाँ बाधित हो सकती हैं और विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु स्थिरता प्रभावित हो सकती है।
- **कथन 3 गलत है।** AMOC थर्मोहेलाइन (ताप-लवणता) प्रक्रियाओं से दृढ़ता से प्रभावित होता है जिसमें तापमान और लवणता दोनों का अंतर शामिल होता है, न कि केवल सतही हवाएं।

इसलिए, केवल कथन 1 और 2 सही हैं। अतः, विकल्प (b)।

प्रश्न 5. संयुक्त राष्ट्र महासचिव (UN Secretary-General) की चुनाव प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. महासचिव की औपचारिक नियुक्ति सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की जाती है।
2. सुरक्षा परिषद का कोई भी स्थायी सदस्य वीटो तंत्र (वीटो पावर) के माध्यम से किसी भी उम्मीदवार को प्रभावी रूप से रोक सकता है।
3. संयुक्त राष्ट्र चार्टर स्पष्ट रूप से महासचिव के पद के लिए महाद्वीपों के बीच घूर्णी प्रतिनिधित्व (rotational representation) को अनिवार्य करता है।
4. महासचिव का कार्यालय संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर प्रशासनिक, राजनयिक और राजनीतिक जिम्मेदारियों को जोड़ता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 97 के तहत, सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर महासभा द्वारा महासचिव की नियुक्ति की जाती है।
- **कथन 2 सही है।** कोई भी स्थायी सदस्य (P5) सुरक्षा परिषद में किसी भी उम्मीदवार को वीटो कर सकता है।
- **कथन 3 गलत है।** संयुक्त राष्ट्र चार्टर में महाद्वीपीय रोटेशन (बारी-बारी से अवसर देने) को अनिवार्य करने वाला कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है, हालांकि अनौपचारिक क्षेत्रीय संतुलन की प्रथाएं मौजूद हैं।
- **कथन 4 सही है।** महासचिव प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ राजनयिक और राजनीतिक कार्य भी निष्पादित करते हैं।

अतः, कथन 1, 2 और 4 सही हैं। इसलिए, विकल्प (c)।

प्रश्न 6. कान्हा टाइगर रिजर्व (Kanha Tiger Reserve) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह मैकाल श्रेणी के भीतर स्थित है और सतपुड़ा-मैकाल परिदृश्य (landscape) का हिस्सा है।
2. बंजार और हेलन नदियाँ इस रिजर्व से जुड़ी महत्वपूर्ण नदी प्रणालियाँ हैं।
3. यह रिजर्व मध्य प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी भाग में चंबल के खड्ड (बीहड़) पारिस्थितिकी तंत्र से सटा हुआ है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** कान्हा टाइगर रिजर्व व्यापक सतपुड़ा-मैकाल परिदृश्य के भीतर मैकाल पहाड़ियों में स्थित है।
- **कथन 2 सही है।** बंजार और हेलन नदियाँ इस रिजर्व के पारिस्थितिकी तंत्र से होकर बहने वाली प्रमुख नदी प्रणालियाँ हैं।
- **कथन 3 गलत है।** यह रिजर्व दक्षिण-पूर्वी मध्य प्रदेश में स्थित है, न कि उत्तर-पश्चिमी मध्य प्रदेश के चंबल खड्ड (बीहड़) क्षेत्र में।

अतः, विकल्प (a) सही उत्तर है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

सामान्य अध्ययन (GS) पेपर 1 (इतिहास और संस्कृति)

प्रश्न 1. परीक्षण कीजिए कि विदेशी यात्रियों के विवरणों ने मध्यकालीन भारतीय समाज को समझने में किस प्रकार योगदान दिया। साथ ही ऐसे आख्यानो (वृत्तांतों) की सीमाओं की भी चर्चा कीजिए। (15 अंक)

आदर्श उत्तर: विदेशी यात्रियों के विवरण मध्यकालीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाहरी स्रोतों में से एक हैं। अल-बिरूनी, इब्न बतूता, मार्को पोलो और फ्रांस्वा बर्नियर जैसे यात्रियों ने भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और प्रशासन को अपने दृष्टिकोण से प्रलेखित (डॉक्यूमेंट) किया। ये विवरण स्वदेशी साहित्यिक और पुरातात्विक साक्ष्यों के पूरक हैं और इतिहासकारों को उस काल की सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता को समझने में मदद करते हैं।

महमूद गजनवी के साथ आए अल-बिरूनी ने अपनी कृति 'किताब-उल-हिंद' में भारतीय धर्म, दर्शन, खगोल विज्ञान और जाति प्रथाओं का विस्तृत विवरण प्रदान किया। उनकी तुलनात्मक पद्धति और बौद्धिक जिज्ञासा उनके लेखन को विशेष रूप से मूल्यवान बनाती है। मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान भारत की यात्रा करने वाले इब्न बतूता ने शहरी जीवन, व्यापार नेटवर्क, संचार प्रणालियों और दिल्ली सल्तनत के कामकाज का जीवंत वर्णन किया। मुगल भारत के एक फ्रांसीसी यात्री फ्रांस्वा बर्नियर ने भूमि राजस्व प्रणालियों, शाही निरंकुशता और सामाजिक असमानताओं पर व्यापक रूप से टिप्पणी की।

ये वृत्तांत इतिहासकारों की कई तरीकों से मदद करते हैं। सबसे पहले, वे रोजमर्रा के जीवन, व्यापार प्रथाओं और शहरीकरण के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जिनकी अक्सर दरबारी इतिहासों (court chronicles) में उपेक्षा की जाती है। दूसरा, वे तुलनात्मक अवलोकन पेश करते हैं क्योंकि यात्रियों ने अक्सर भारतीय समाज की तुलना अपनी खुद की संस्कृतियों से की थी। तीसरा, वे राजनीतिक संस्थाओं और आर्थिक संरचनाओं के पुनर्निर्माण में मदद करते हैं, विशेष रूप से वहाँ जहाँ स्वदेशी रिकॉर्ड खंडित (अधूरे) हैं।

हालाँकि, इन विवरणों की कई सीमाएँ भी हैं। यात्रियों में अक्सर स्थानीय भाषाओं की समझ की कमी थी और वे दुभाषियों (इंटरप्रेटर्स) पर निर्भर थे, जिससे तथ्यों में विकृति आई। उनके अवलोकन सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों और पहले से बनी धारणाओं से आकार लेते थे। उदाहरण के लिए, बर्नियर ने यूरोपीय राजनीतिक प्रणालियों के साथ तुलना करके मुगल शासन की निरंकुश प्रकृति को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया। इसी तरह, कई यात्रियों ने आम लोगों के अनुभवों की अनदेखी करते हुए कुलीन (अभिजात वर्ग) के जीवन पर असंगत रूप से अधिक ध्यान केंद्रित किया।

इसके अलावा, विदेशी यात्रियों ने कभी-कभी भारतीय सामाजिक प्रथाओं की व्याख्या धार्मिक या संकीर्ण जातीय (ethnocentric) चश्मे से की। इसलिए उनके लेखन को बिना आलोचनात्मक विश्लेषण के स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकार, जबकि विदेशी यात्रियों के विवरण अपरिहार्य ऐतिहासिक स्रोत बने हुए हैं, मध्यकालीन भारत की संतुलित समझ के लिए स्वदेशी ग्रंथों, शिलालेखों और पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ उनकी पुष्टि (सत्यापन) की जानी आवश्यक है।

सामान्य अध्ययन (GS) पेपर 2 (राजव्यवस्था और शासन)

प्रश्न 2. "भारत में एक-दल के प्रभुत्व का दौर राजनीतिक स्थिरता का स्रोत भी था और लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए एक चुनौती भी।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (15 अंक)

आदर्श उत्तर: स्वतंत्रता के तुरंत बाद की अवधि ने चुनावी राजनीति में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभुत्व को देखा। 1952 के पहले आम चुनावों से लेकर 1960 के दशक के उत्तरार्ध तक, कांग्रेस केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर प्रमुख राजनीतिक शक्ति बनी रही। राजनीतिक वैज्ञानिक अक्सर इस चरण को "कांग्रेस प्रणाली" (Congress system) के रूप में वर्णित करते हैं।

एक-दल के प्रभुत्व ने राष्ट्र-निर्माण के अत्यधिक नाजुक चरण के दौरान राजनीतिक स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत ने हाल ही में विभाजन, सांप्रदायिक हिंसा, शरणार्थी संकट और आर्थिक पिछड़ेपन का अनुभव किया था। ऐसी परिस्थितियों में, राष्ट्रव्यापी वैधता वाले एक मजबूत राजनीतिक संगठन ने एकता और लोकतांत्रिक निरंतरता को बनाए रखने में मदद की। जवाहरलाल नेहरू जैसे कांग्रेस नेताओं को अपार जन-विश्वसनीयता प्राप्त थी और उन्होंने संसदीय लोकतंत्र को सफलतापूर्वक संस्थागत रूप दिया।

एक ही दल के प्रभुत्व ने दीर्घकालिक योजना और नीति निरंतरता को भी सक्षम बनाया। भूमि सुधार, पंचवर्षीय योजनाएँ, राज्यों का भाषाई पुनर्गठन और विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता को अपनाने जैसी प्रमुख पहलों को बिना किसी गंभीर राजनीतिक अस्थिरता के लागू किया गया। कांग्रेस ने एक व्यापक गठबंधन के रूप में कार्य किया जिसमें विभिन्न वैचारिक झुकावों, जातियों, भाषाई समूहों और क्षेत्रों को शामिल किया गया था।

हालाँकि, एक-दल के प्रभुत्व ने कई लोकतांत्रिक चिंताएँ भी पैदा कीं। विपक्षी दलों की कमजोरी ने प्रभावी संसदीय संवीक्षा (स्कूटनी) और जवाबदेही को कम कर दिया। कई क्षेत्रों में चुनावी प्रतिस्पर्धा सीमित रही, जिससे कांग्रेस के भीतर की गुटबाजी की राजनीति ने वास्तविक लोकतांत्रिक विकल्पों की जगह ले ली।

समय के साथ, सत्ता के अत्यधिक संकेंद्रण के कारण केंद्रीकरण और राजनीतिक संरक्षण (patronage) की प्रवृत्तियाँ बढ़ीं। संघ और राज्य दोनों स्तरों पर प्रभुत्व ने कुछ उदाहरणों में संघीय संतुलन को कमजोर किया। आलोचकों का तर्क है कि मजबूत विपक्ष की अनुपस्थिति ने एक मजबूत बहु-दलीय लोकतांत्रिक संस्कृति के विकास में देरी की।

1967 के बाद कांग्रेस के प्रभुत्व में आई गिरावट ने यह प्रदर्शित किया कि लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा अंततः परिपक्व हो गई थी। क्षेत्रीय दल और वैचारिक विकल्प अधिक मुखरता से उभरे, जिससे भारतीय लोकतंत्र अधिक बहुलवादी बन गया।

इसलिए, एक-दल के प्रभुत्व का दौर अपनी प्रकृति में विरोधाभासी था। जहाँ इसने गणराज्य के प्रारंभिक वर्षों के दौरान स्थिरता प्रदान की, वहीं इसने समवर्ती रूप से प्रतिस्पर्धी लोकतांत्रिक राजनीति को बाधित भी किया। इसके बावजूद, प्रभुत्व से बहु-दलीय प्रतिस्पर्धा की ओर शांतिपूर्ण संक्रमण भारतीय लोकतंत्र के लचीलेपन और जीवंतता को दर्शाता है।

सामान्य अध्ययन (GS) पेपर 3 (अर्थव्यवस्था)

प्रश्न 3. औपनिवेशिक शासन द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था में पैदा की गई संरचनात्मक विकृतियों (structural distortions) का विश्लेषण कीजिए। इन विकृतियों ने स्वतंत्रता के बाद के विकास नियोजन (प्लानिंग) को कैसे प्रभावित किया? (15 अंक)

आदर्श उत्तर: औपनिवेशिक शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना को बुनियादी रूप से इस तरह बदल दिया जिसने मुख्य रूप से भारतीय विकास के बजाय ब्रिटिश साम्राज्यवादी हितों की सेवा की। 1947 में जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की, तब तक अर्थव्यवस्था गहरी संरचनात्मक विकृतियों, व्यापक गरीबी और निम्न औद्योगिक क्षमता से पीड़ित थी।

एक प्रमुख विकृति स्वदेशी उद्योगों का विनाश थी। सस्ते मशीन-निर्मित ब्रिटिश सामानों की आमद के कारण पारंपरिक हस्तशिल्प और कपड़ा उत्पादन में तेजी से गिरावट आई। भारत को कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता और ब्रिटिश निर्मित उत्पादों के बाजार में बदल दिया गया, जिससे विऔद्योगीकरण (deindustrialisation) हुआ।

कृषि भी अत्यधिक शोषक और गतिहीन हो गई। ज़मींदारी जैसी औपनिवेशिक भूमि राजस्व प्रणालियों ने कृषि उत्पादकता पर राजस्व निकालने (वसूली) को प्राथमिकता दी। किसानों को ऋणग्रस्तता, असुरक्षा और बार-बार अकाल का सामना करना पड़ा। कृषि के व्यावसायीकरण ने खाद्य सुरक्षा की कीमत पर नकदी फसलों की खेती को बढ़ावा दिया।

एक और संरचनात्मक विकृति आधुनिक उद्योगों का कम विकास था। औद्योगिक विकास सीमित रहा और जूट तथा सूती वस्त्र जैसे कुछ क्षेत्रों में केंद्रित रहा। पूंजीगत वस्तु उद्योग (capital goods industries) और तकनीकी क्षमताएं बेहद कमजोर थीं। रेलवे और बंदरगाहों जैसे बुनियादी ढांचे का निर्माण संतुलित क्षेत्रीय विकास के बजाय मुख्य रूप से औपनिवेशिक व्यापार को सुगम बनाने के लिए किया गया था।

औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था अत्यधिक गरीबी और बेरोजगारी से भी त्रस्त थी। प्रति व्यक्ति आय स्थिर रही और साक्षरता का स्तर निराशाजनक रूप से निम्न बना रहा। क्षेत्रीय असमानताएँ काफी बढ़ गईं।

इन विकृतियों ने स्वतंत्रता के बाद के विकास नियोजन (development planning) को भारी रूप से प्रभावित किया। भारतीय नीति निर्माताओं ने तीव्र औद्योगीकरण, राज्य के नेतृत्व वाले नियोजन और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को स्वीकार किया। परिणामस्वरूप, योजना आयोग और पंचवर्षीय योजनाओं ने भारी उद्योगों, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (PSUs) और आयात प्रतिस्थापन औद्योगीकरण (import substitution industrialisation) को प्राथमिकता दी।

औपनिवेशिक शासन से विरासत में मिली कृषि असमानताओं को दूर करने के लिए भूमि सुधार और सामुदायिक विकास कार्यक्रम शुरू किए गए। बुनियादी ढांचे, शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान में सार्वजनिक निवेश पर जोर भी औपनिवेशिक अल्पविकास से उबरने के प्रयासों को दर्शाता है।

इस प्रकार, औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने दीर्घकालिक संरचनात्मक कमजोरियाँ पैदा कीं जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद भारत की विकासात्मक प्राथमिकताओं को आकार दिया। स्वतंत्र भारत में प्रारंभिक नियोजन के एक बड़े हिस्से को औपनिवेशिक शासन के दौरान जमी जमाई विकृतियों को उलटने के प्रयास के रूप में समझा जा सकता है।

सामान्य अध्ययन (GS) पेपर 4 (एथिक्स, इंटीग्रिटी और एण्टीट्यूड)

प्रश्न 4. "नैतिक नेतृत्व केवल अधिकार का प्रयोग करने के बारे में नहीं है, बल्कि विश्वास और संस्थागत विश्वसनीयता बनाने के बारे में है।" लोक प्रशासन के उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। (15 अंक)

आदर्श उत्तर: नैतिक नेतृत्व (Ethical leadership) से तात्पर्य ईमानदारी, जवाबदेही, सहानुभूति और जन कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित नेतृत्व से है। लोक प्रशासन में नैतिक नेतृत्व आवश्यक है क्योंकि शासन अंततः न केवल कानूनों और संस्थानों पर बल्कि जनता के विश्वास और नैतिक वैधता पर भी निर्भर करता है।

एक नैतिक नेता निर्णय लेने में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करके विश्वास जगाता है। ऐसा नेतृत्व संस्थागत विश्वसनीयता को मजबूत करता है क्योंकि नागरिक शासन प्रक्रियाओं को निष्पक्ष और जवाबदेह मानते हैं। लोकतांत्रिक प्रणालियों में, वैधता केवल संवैधानिक प्राधिकार (अथॉरिटी) से ही नहीं बल्कि नैतिक आचरण से भी प्राप्त होती है।

लोक प्रशासन में नैतिक नेतृत्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां अधिकारी नागरिकों के जीवन को प्रभावित करने वाली विवेकाधीन शक्तियों (discretionary powers) का प्रयोग करते हैं। प्राधिकार का दुरुपयोग, भ्रष्टाचार और मनमानापन जनता के विश्वास को खत्म कर सकता है और संस्थाओं को कमजोर कर सकता है। इसके विपरीत, नैतिक आचरण नागरिक सहयोग और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है।

उदाहरण के लिए, दिल्ली मेट्रो परियोजना में ई. श्रीधरन के नेतृत्व ने ईमानदारी, व्यावसायिकता (प्रोफेशनलिज्म) और जवाबदेही का प्रदर्शन किया। न्यूनतम भ्रष्टाचार के साथ परियोजनाओं के समय पर पूरा होने से सरकारी संस्थानों में जनता का विश्वास बढ़ा। इसी तरह, मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में टी.एन. शेषन के कार्यकाल ने चुनावी मानदंडों को कड़ाई से लागू करके चुनावी संस्थानों की विश्वसनीयता को मजबूत किया।

नैतिक नेतृत्व संकट के समय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राकृतिक आपदाओं या महामारियों के दौरान, नागरिक प्रशासकों से सहानुभूतिपूर्वक, ईमानदारी से और कुशलता से कार्य करने की अपेक्षा करते हैं। जो नेता पारदर्शी रूप से संवाद करते हैं और जन कल्याण को प्राथमिकता देते हैं, वे संस्थागत विश्वास को बढ़ाते हैं।

हालाँकि, नैतिक नेतृत्व को राजनीतिक दबाव, नौकरशाही जड़ता (bureaucratic inertia), हितों के टकराव (conflict of interests) और प्रणालीगत भ्रष्टाचार जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए, व्यक्तिगत ईमानदारी

के पूरक के रूप में सतर्कता प्रणाली, पारदर्शिता कानून (जैसे RTI) और नैतिकता प्रशिक्षण जैसे संस्थागत तंत्र आवश्यक हैं।

समकालीन शासन में, नैतिक नेतृत्व में तेजी से भागीदारीपूर्ण निर्णय लेना (participatory decision-making) और कमजोर समूहों के प्रति सहानुभूति शामिल हो रही है। प्रशासकों को दक्षता के साथ न्याय और कानून के साथ नैतिकता का संतुलन बनाना चाहिए।

अंततः, नैतिक नेतृत्व केवल व्यक्तिगत गुण तक ही सीमित नहीं है। यह विश्वास, जवाबदेही और संस्थागत विश्वसनीयता की एक ऐसी संस्कृति बनाता है जो लोकतंत्र को मजबूत करती है और शासन के परिणामों में सुधार करती है। नैतिक नेतृत्व के बिना, अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए संस्थान भी जनता का विश्वास और प्रभावशीलता खो सकते हैं।

समसामयिकी (Current Affairs)

प्रश्न 5. भारत में जैव विविधता संरक्षण और सतत विकास के संदर्भ में कावू नर्सरीज़ (Kavu Nurseries) के पारिस्थितिक और सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व की चर्चा कीजिए। (15 अंक)

आदर्श उत्तर: कावू नर्सरीज़ (Kavu Nurseries) पवित्र उपवनों (sacred groves) की पारंपरिक पारिस्थितिक विरासत से जुड़ी हैं, विशेष रूप से दक्षिण भारत में। "कावू" शब्द आमतौर पर धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण स्थानीय समुदायों द्वारा संरक्षित पवित्र वन क्षेत्रों को संदर्भित करता है। हाल के समय में, कावू नर्सरीज़ ने जैव विविधता संरक्षण, पारिस्थितिक बहाली और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए ध्यान आकर्षित किया है।

पारिस्थितिक रूप से, कावू पारिस्थितिक तंत्र सूक्ष्म जैव विविधता हॉटस्पॉट (micro biodiversity hotspots) के रूप में कार्य करते हैं। वे स्थानीय वनस्पतियों, औषधीय पौधों, सरीसृपों, पक्षियों और परागणकों (pollinators) को संरक्षित करते हैं जो अन्यथा शहरीकरण और वनों की कटाई के कारण गायब हो सकते हैं। चूंकि ये उपवन केवल राज्य प्रवर्तन के बजाय सामुदायिक परंपराओं के माध्यम से संरक्षित हैं, इसलिए वे समुदाय-नेतृत्व वाले संरक्षण के एक महत्वपूर्ण मॉडल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

कावू नर्सरीज़ स्थानीय जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल स्वदेशी प्रजातियों का प्रसार करके पारिस्थितिक बहाली में योगदान देती हैं। वाणिज्यिक एकल-कृषि (monoculture) वृक्षारोपण के विपरीत, ऐसी नर्सरी पारिस्थितिक संतुलन का समर्थन करती हैं और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लचीलापन बढ़ाती हैं। वे भूजल पुनर्भरण (groundwater recharge), मृदा संरक्षण और स्थानीय जल विज्ञान चक्र को बनाए रखने में भी मदद करती हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, कावू परंपराएं भारतीय सभ्यता में संस्कृति और पारिस्थितिकी के बीच गहरे संबंध को दर्शाती हैं। पवित्र उपवन ऐतिहासिक रूप से समुदाय-प्रबंधित पारिस्थितिक साझा संसाधन (ecological commons) के रूप में काम करते थे जहां संसाधनों के दोहन को पारंपरिक मानदंडों के माध्यम से विनियमित किया जाता था। यह दर्शाता है कि कैसे सांस्कृतिक मूल्य पर्यावरण नैतिकता को सुदृढ़ कर सकते हैं।

यह अवधारणा सतत विकास के आधुनिक विचारों के साथ भी मेल खाती है। समकालीन संरक्षण नीतियां तेजी से स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और सामुदायिक भागीदारी के महत्व को स्वीकार कर रही हैं। कावू नर्सरीज़ पर्यावरण-पर्यटन (eco-tourism), औषधीय पौधों की खेती और पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से स्थायी आजीविका का समर्थन कर सकती हैं।

हालाँकि, तीव्र शहरी विस्तार, बदलती जीवन शैली और कमजोर होती पारंपरिक संस्थाएँ इन पारिस्थितिक तंत्रों के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। व्यावसायिक अतिक्रमण और घटती सामुदायिक भागीदारी ने कई पवित्र उपवनों के दायरे को कम कर दिया है।

इसलिए, कावू नर्सरीज़ के संरक्षण के लिए पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को आधुनिक पर्यावरण शासन के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। स्थानीय भागीदारी को मजबूत करना, जागरूकता को बढ़ावा देना और स्वदेशी संरक्षण प्रथाओं का समर्थन करना कावू नर्सरीज़ को भारत में जैव विविधता संरक्षण और सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बना सकता है।

